ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 18 अंक 19 कुल पृष्ठ-8 29 सितम्बर से 5 अक्टूबर, 2022 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853123 सम्वत् 2079 आ. शु.-04

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी संन्यासी सार्वदेशिक सभा संचालन समिति के पूर्व प्रधान एवं वैदिक विरक्त मण्डल के संस्थापक अध्यक्ष स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती (चम्बा) की तपःस्थली दयानन्द मठ चम्बा, हिमाचल प्रदेश का वार्षिकोत्सव एवं 22वाँ दुर्लभ शारद यज्ञ 27 सितम्बर, 2022 को भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने पूरे कार्यक्रम की अध्यक्षता की

आचार्य महावीर सिंह शास्त्री ने किया सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन

स्वामी सुमेधानन्द शिष्य मंडल के पदाधिकारियों एवं शिष्यों ने संभाला व्यवस्था का दायित्व

गत् 23 से 27 सितम्बर, 2022 को चम्बा का वार्षिक समारोह धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में वार्षिकोत्सव एवं शारद यज्ञ का पूरा कार्यक्रम संचालित हुआ। कार्यक्रम का संयोजन दयानन्द मठ चम्बा के आचार्य महावीर जी ने किया तथा शारद यज्ञ का आचार्यत्व युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी एवं आचार्य महावीर जी ने संयुक्त रूप से संभाला। यज्ञ के अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी वेद प्रकाश जी (नूरपुर), महात्मा धर्ममुनि जी, स्वामी संतोषानन्द जी व आचार्य महावीर सिंह जी के प्रवचन भी होते रहे और श्री संदीप आर्य, श्री संजय शास्त्री, श्री सुनील शास्त्री, श्री मनोज कुमार जी शास्त्री, श्रीमती नीतू आर्या व श्रीमती सरस्वती आर्या के भजनों का भी सुन्दर कार्यक्रम चलता रहा। यज्ञ में वेदपाठ का दायित्व वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं ने कुशलता के साथ संभाला।

25 सितम्बर को दयानन्द मठ चम्बा एवं महर्षि दयानन्द आदर्श उच्च विद्यालय का वार्षिक समारोह स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया।

इस अवसर पर आचार्य महावीर सिंह जी ने विद्यालय की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि हमारा उद्देश्य बच्चों का निर्माण करना है, जिससे यही बच्चे देश की प्रगति में अपना योगदान दे सकें। यहाँ पर पढ़ रहे बच्चों को शिक्षा के साथ–साथ अच्छे संस्कार भी दिये जाते हैं। छात्र एवं छात्राओं को वेद पाठ तथा वैदिक साहित्य का स्वाध्याय करने की विशेष शिक्षा एवं प्रेरणा दी जाती है जिस कारण से वे बड़े सुन्दर ढंग से वेद पाठ कर पाते हैं। प्रत्येक वर्ष आयोजित होने वाले शारद यज्ञ का विशेष प्रभाव विद्यालय के बच्चों पर पड़ता है। इस प्रकार के आयोजन से बच्चों में प्राचीन वैदिक संस्कृति के प्रति आकर्षण पैदा होता है।

महर्षि दयानन्द आदर्श उच्च विद्यालय, दयानन्द मठ चम्बा का स्थान हिमाचल प्रदेश के विशेष विद्यालयों में गिना जाता है। कार्यक्रम के उपरान्त सभी अतिथियों, अविभावकों एवं उपस्थित गणमान्य महानुभावों के लिए सुन्दर जलपान की व्यवस्था की गई थी।

26 सितम्बर, 2022 को प्रातः 6.30 बजे से 27 सितम्बर, 2022 प्रातः 10 बजे तक दुर्लभ शारद यज्ञ चला। निरन्तर चलने वाले इस विशेष यज्ञ में समुचित मात्रा में शुद्ध घृत एवं सामग्री का प्रयोग हुआ। 28 घण्टे निरन्तर चलने वाले इस यज्ञ में सैकड़ों स्त्री–पुरुषों ने आहुतियाँ प्रदान की। ऋग्वेद के आधार पर यह दुर्लभ शारद यज्ञ राष्ट्र में वीरता, पौरुष एवं स्वाभिमान को बढ़ाने की भावना से किया जाता है। यज्ञ के दौरान बीच–बीच में यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी तथा अन्य विद्वानों के व्याख्यान तथा भजनीकों के भजन भी नियमित होते रहे और 27 सितम्बर, 2022 को प्रातः 10 बजे यज्ञ की पूर्णाहुति हुई।

पूर्णाहुति के अवसर पर उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य संन्यासी एवं नेता स्वामी आर्यवेश जी ने अपने मुख्य उद्बोधन में दैनिक संध्या, उपासना, दैनिक स्वाध्याय तथा साप्ताहिक अथवा पाक्षिक यज्ञ अवश्य करने का संकल्प दिलावाया। वहीं उन्होंने यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जितने भी श्रेष्ठ कर्म हैं जिससे स्वयं को सुख और प्रसन्नता मिले और दूसरों का उपकार हो वे सभी यज्ञ कहलाते हैं। यज्ञ में प्राणीमात्र के कल्याण की भावना निहित है। उन्होंने कहा कि 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमम् कर्मः' यज्ञ दुनिया का श्रेष्ठतम् कर्म कहलाता है। स्वामी जी ने कहा कि यज्ञ में यदि गाय का घृत और औषधि युक्त सामग्री का प्रयोग किया जाये तो विषैले रोगाणुओं को तो नष्ट करेगा ही क्योंकि यज्ञ की अग्नि में विषैले जीवाणुओं तथा तत्त्वों को नष्ट करने की विलक्षण क्षमता होती है। यज्ञ के द्वारा पर्यावरण की सुरक्षा, वायु मण्डल की पवित्रता, विविध रोगों का नाश तथा दीर्घायुष्य की प्राप्ति होती है। स्वामी जी ने उपस्थित सभी आर्यजनों को यज्ञ के वैज्ञानिक महत्त्व को समझाते हुए कहा कि हम सबको प्रतिदिन औषधियुक्त सामग्री तथा शुद्ध देशी घी से यज्ञ करना चाहिए। हमें भारत की प्राचीन यज्ञीय परम्परा को पूरे विश्व में फैलाने का प्रचार–प्रसार करना चाहिए। इससे मानवता एवं पर्यावरण का अत्यन्त उपकार होगा। उन्होंने कहा कि स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज हमेशा कहा करते थे कि पूर्ण समर्पित भाव से यज्ञ तथा परोपकार के कार्य करने चाहिए। स्वामी जी स्वयं लोगों के सेवा में सदैव तत्पर रहते थे और उसी भावना से अभिभूत होकर आचार्य महावीर जी व इनके सभी सहयोगियों ने जिनमें मुख्यरूप से स्वामी सुमेधानन्द शिष्यमण्डल, दयानन्द उच्च विद्यालय के सभी अध्यापक–अध्यापिकाएँ एवं अन्य कार्यकर्ता विशेष रूप से यज्ञ एवं परोपकार के कार्यों में लगे रहते हैं। ये सभी महानुभाव प्रशंसा के पात्र हैं। पूज्य स्वामी समुमेधानन्द जी महाराज द्वारा शुरू किये गये दुलर्भ शारद यज्ञ को निरन्तर जारी रखने के संकल्प के लिए स्वामी आर्यवेश जी ने आचार्य महावीर जी को विशेष साधुवाद दिया।

पूर्णाहुति के अवसर पर आचार्य महावीर सिंह जी ने इस शारद यज्ञ के समस्त सहयोगियों एवं आगन्तुक संन्यासियों, विद्वानों एवं गणमान्य महानुभावों का मठ की ओर से धन्यवाद ज्ञापित किया तथा अपना आशीर्वाद एवं सहयोग बनाये रखने की प्रार्थना की।

इस पाँच दिवसीय कार्यक्रम में मुख्यरूप से श्री श्रीमती सरस्वती आर्या, श्रीमती करुणा आर्या (मंत्री दयानन्द मठ), श्रीमती बृजबाला (प्रधानाचार्या), श्री रमेश चन्द्र शास्त्री, श्रीमती डिम्पल आदि के अतिरिक्त कई वरिष्ठ संन्यासी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे। दुर्लभ शारद यज्ञ में आचार्य महावीर जी एवं श्रीमती सरस्वती आर्या, श्री रमेश चन्द्र शास्त्री एवं श्रीमती नीतू आर्या, श्रीमती करुणा आर्या व चेतना आर्या आदि के अतिरिक्त अमृतसर से पधारे सर्वश्री जनकराज दुग्गल एवं श्रीमती कंचन दुग्गल, श्री आशीष मेहरा एवं श्रीमती पूजा मेहरा, श्री सिद्धार्थ कपूर एवं श्रीमती श्वस्ति कपूर, श्री जवाहर लाल दुग्गल व उनकी धर्मपत्नी ने यजमान के रूप में यज्ञ में आहुतियाँ देकर अपनी श्रद्धा एवं निष्ठा का परिचय दिया। उनके अतिरिक्त श्रीमती रुकमणि एवं उनके सुपुत्र डॉ. योगेश कुमार, श्री विक्रम महाजन मंत्री आर्य समाज चम्बा, श्री अमर सिंह आर्य प्रधान, श्री चतर सिंह सूर्यवंशी, श्री कैलाश शास्त्री व चम्बा नगर के कई गणमान्य महानुभावों ने यज्ञ में सम्मिलित होकर अपनी आहुति प्रदान की।

पूर्णाहुति के अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष व यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी आर्यवेश जी ने सभी यजमानों एवं यज्ञ में सम्मिलित होने वाले महानुभावों को अपने आशीर्वचन से उत्साहित किया। विदित हो कि श्री जनकराज दुग्गल जो आश्रम के एक मजबूत स्तम्भ एवं सहयोगी हैं उन्होंने सभी संन्यासियों, उपदेशकों एवं वेदपाठियों को कम्बल एवं विशेष दक्षिणा देकर सम्मानित किया।

पांच दिवसीय कार्यक्रम में विद्यालय की सभी अध्यापिकाओं एवं दयानन्द मठ चम्बा के सभी कार्यकर्ताओं तथा स्वामी सुमेधानन्द शिष्य मण्डल के कार्यकर्ताओं ने व्यवस्था में अपना योगदान देकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

पाखण्ड और इसका उन्मूलन

– डॉ. सुरेन्द्र कुमार कादियाण

प्राचीन काल से ही मानव जीवन में श्रद्धा, विश्वास, भक्ति, गुरुडम, चमत्कार और धर्मभीरुता का इतना अधिक हस्तक्षेप रहा है कि कथा-प्रवचन, सत्संग, तीर्थाटन, श्राद्ध, दान-पुण्य, ज्योतिष, यज्ञ-बलि, जन्म-पत्री, मन्त्र-पाठ, मूर्तिपूजा, व्रतोपवास, झाड़-फूंक, तन्त्र-क्रियाओं से लम्पट, धूर्त्त, धोखेबाज लोगों ने जन-साधारण का जम कर आर्थिक व धार्मिक शोषण किया है। विज्ञान और तकनीक, तुलनात्मक अध्ययन, तर्क और कसौटी के इस युग में भी यह शोषण यथावत जारी है। आज भी धर्म के नाम पर अस्पृश्यता जीवित है, बाल-विवाह प्रथा जीवित है, सती-प्रथा महिमा-मण्डित है और देवदासियों के नाम पर नारी का दैहिक शोषण जारी है।

भारतीय पुनर्जागरण के अनेक मसीहाओं ने जिनमें राजा राममोहन राय, देवेन्द्रनाथ ठाकुर, बाबू केशवचन्द्र सेन, मदनमोहन विद्यासागर, रवीन्द्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानन्द, महादेव गोविन्द रानड़े, ज्योतिबा फुल्ले और महर्षि दयानन्द सरस्वती का नाम गौरव से स्मरण किया जाता है। उन्होंने धर्म के नाम पर फैले इस समूचे पाखण्ड की न केवल नये सिरे से व्याख्या की बल्कि ऐसी वैकल्पिक व्यवस्था भी प्रस्तुत की जिसकी पुष्टि वेदों, उपनिषदों, ब्राह्मण ग्रन्थों, स्मृतियों, दर्शन-शास्त्रों से भी होती थी। विशेषकर महर्षि दयानन्द का इस क्षेत्र में क्रान्तिकारी योगदान रहा है। जिन वेदों के बारे में प्रचलित धारणा थी कि उन्हें तो अहिरावण पाताल ले गया था उन वेदों को स्वामी दयानन्द ने जर्मनी से मंगवा कर भारत में प्रकाशित किया। स्वामी दयानन्द परम आस्तिक, योगात्मा, अध्यात्मवादी, महान् तार्किक और मानवतावादी दिव्य आत्मा थे। उन्होंने वेदों का तलस्पर्शी आलोड़न कर अपने निष्कर्ष सत्यार्थप्रकाश में शब्द-निबद्ध किये। संस्कार-विधि में मुख्यतः सोलह संस्कारों का प्रतिपादन कर जन-साधारण में धर्म-प्रवृत्ति जगाई। श्रद्धा और विश्वास को उन्होंने तर्क एवं वेद-आधारित बनाया। भक्ति को योग व अध्यात्म से जोड़ा, गुरु घंटालों के स्थान पर उन्होंने तर्क को ऋषि माना, दान सुपात्रों को देने की व्यवस्था की, धर्मभीरुता के स्थान पर धर्म-चिन्तन को प्रतिष्ठित किया, फलित ज्योतिष के स्थान पर गणित ज्योतिष को वरीयता प्रदान की, तीर्थाटन-मूर्ति पूजा, झाड़-फूँक आदि को पाखण्ड घोषित किया, अवतारवाद के स्थान पर निराकारवाद की अवधारणा को प्रचलित किया। उन्होंने जन्म-पत्री को मरण-पत्री की संज्ञा दी। दैनिक जीवन को धार्मिक व आध्यात्मिक बनाने के लिए उन्होंने महामुनि पातंजलि के अष्टांग योग मार्ग का प्रतिपादन किया, पंच महायज्ञों को अपनाने पर बल दिया, पुरुषार्थ चतुष्टय के अनुसार जीवन व्यतीत करने का आग्रह किया।

महर्षि दयानन्द के युगान्तरकारी व्यक्तित्व और कृतित्व ने धार्मिक क्षेत्र में एक ऐसी समग्र क्रान्ति का अधिष्ठान किया कि उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने अपनी श्रेष्ठ परम्पराओं के कारण सभी समकालीन सुधारवादी आन्दोलनों को निस्तेज-सा कर दिया। कारण, आर्यसमाज ने सत्य का आलम्बन करते हुए न तो किसी की लिहाज की और न किसी का दबाव माना। आर्यसमाज की प्रथम पीढ़ी ने धर्म को अपने जीवन में इस योग्यता, परिपक्वता, निष्ठा व सक्रियता से अपनाया कि उनकी छवि अलग ही दिखाई देने लगी। आर्यसमाज ने विपुल साहित्य का प्रकाशन कर, गाँव-गाँव प्रचार कर, आर्य महासम्मेलनों का आयोजन कर, सात-सात दिन के वार्षिक उत्सवों का व्यवस्था कर जिसमें प्रभातफेरी निकालने का प्रबन्ध भी होता था, शास्त्रार्थों की परम्परा विकसित कर एक ऐसा प्रचण्ड वातावरण तैयार कर दिया था कि हर व्यक्ति देख कर दंग रह जाता था। डी.ए.वी. संस्थाओं और गुरुकुलों से तैयार पीढ़ी ने तो इस वातावरण को और अधिक अग्रणी एवं प्रभावशाली बनाने में बड़ा भारी योगदान दिया। जब कोई आर्य समाजी बनता था तो परिवार और बिरादरी में तहलका मच जाता था, उसका बहिष्कार होने लगता था। आर्यसमाज का सबसे बड़ा प्रहार अनेकेश्वरवाद, मूर्तिपूजा, तीर्थाटन, अवतारवाद पर हुआ, फलित ज्योतिष व झाड़-फूँक पर हुआ। बाल-विवाह, सती प्रथा विधवा विवाह निषेध और दहेज प्रथा पर हुआ। महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज ने अपनी इस नई विचारधारा को वेदों से जोड़ा जो धर्म का मूल था। उसने अपनी इस कसौटी पर हिन्दू धर्म को ही नहीं जैन धर्म, बौद्ध धर्म, सिख धर्म, इस्लाम व इसाईयत को भी परखने का सफल प्रयास किया। सभी परम्परावादी धर्मों से आर्यसमाज

ने टक्कर लेकर समझाया धर्म का आधार वेद है और वेद की ओर ही सबको लौटना होगा।

महर्षि दयानन्द और उनके आर्य समाज ने यम-नियम पर आधारित जीवन को श्रेष्ठ मानते हुए जिस जीवन शैली का निर्माण किया उसमें नशाखोरी, शराबखोरी, धूम्रपान, भांग, चरस, गांजा आदि के लिए कोई स्थान नहीं था, अनाचार, भ्रष्टाचार, के लिए कोई स्थान नहीं था, फैशन परस्ती सिनेमाखोरी, ताशबाजी, और विलासित के लिए कोई स्थान नहीं था। आर्य समाज ने स्वदेशी का नारा देकर विदेशी वस्तुओं के प्रयोग का बहिष्कार किया और खादी का प्रचार किया जिससे उन लाखों जुलाहों को काम मिला जिन्हें लंकाशायर के कपड़ा मिलों ने बेकार कर दिया था। स्वराज्य, स्वाधीनता का समाघोष लगा कर आर्य समाज ने स्वतन्त्रता आन्दोलन की हर धारा में अपना योगदान दिया। देश में ही नहीं विदेशी भूमि पर जाकर भी उसने स्वाधीनता का संघर्ष शुरू किया। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के प्रयास तो महर्षि दयानन्द के समय से ही शुरू हो चुके थे।

आजादी मिलने पर भारत सरकार से यह आशा रखी गई थी कि आर्य समाज की प्रगतिशील एवं क्रान्तिकारी सुधार योजना को राष्ट्रीय जीवन में मूर्तिमंत किया जायेगा विशेषतः गो-हत्या और नशाखोरी का कलंक तो जरूर मिटा दिया जायेगा तथा पाखण्ड और अंधविश्वास के विरुद्ध निर्णायक संघर्ष छेड़ा जा सकेगा। लेकिन लोकतन्त्र के नाम पर सच व झूठ सब स्वीकार कर लिया गया। गो हत्या व नशाखोरी उन्मूलन का दायित्व प्रांतीय सरकारों को सौंप कर केन्द्र ने पल्ला झाड़ लिया। आज तो टी.वी. चैनलों पर वह सारा पाखण्ड परोसा जा रहा है जिसका आर्य समाज ने विरोध किया था। इसके साथ-साथ पाखण्ड को आकर्षक शैली में महिमा-मण्डित करने की होड़ भी लग चुकी है। गुरुडम, फलित ज्योतिष, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, तीर्थाटन सभी का प्रचार टी.वी. पर हो रहा है। नतीजा यह निकला है कि हरिद्वार में जहाँ हजारों लोग कांवड़ लेने जाते थे वहाँ अब लाखों लोग जाने लगे हैं। वैष्णो देवी का नाम पहले हिमाचल से बाहर कोई नहीं जानता था लेकिन सरकारी सुविधाएँ वहाँ उपलब्ध कराये जाने से भारी भीड़ जुटने लगी है। यही अमरनाथ धाम व अन्य तीर्थोंके साथ घटित हो रहा है। धूम्रपान और शराबखोरी को सिनेमा के साथ-साथ टेलीविजन ने भी कम प्रचारित नहीं किया है। यही स्थिति मांसाहार का प्रसारण होने से बनती चली गई।

रूढ़िवादी धर्म तन्त्र, नशा माफिया, बहुराष्ट्रवादी कम्पनियों व सत्ताधारी राजनीतिज्ञों ने एक ऐसा चक्रव्यूह रच दिया है कि एक आम भारतीय के आर्थिक शोषण, सामाजिक शोषण और धार्मिक शोषण की सम्भावनाएँ पहले से अधिक प्रबल और दृढ़ होती जा रही हैं। इस समस्या का सबसे अधिक दुर्बल पक्ष यह है कि इससे सतत संघर्षरत रहने वाला आर्य समाज आज अनेक कारणों से निष्क्रिय होता चला गया है और दूसरा कोई सशक्त माध्यम ऐसा नहीं है कि स्थिति का मुकाबले करने को मैदान में उतरे। प्रिण्ट मीडिया और टी.वी. दोनों जिन पूंजीपतियों के हाथ में हैं वे रूढ़िवादी समाज से सम्बंध रखते हैं। पूंजीपति के हितों को दृष्टिगत रखते हुए वे नशाखोरी विरोधी आन्दोलन में किसी प्रकार का सहयोग नहीं देते और अपनी पौराणिक आस्था, संस्कार, साधना के कारण वे आर्य समाजी विचारधारा को क्यों भाव देंगे। यही कारण है कि टी.वी. चैनलों पर बाकायदा ज्योतिष, तन्त्र-विद्या, भूत-प्रेत, मूर्ति पूजा तीर्थाटन, को महिमा-मण्डित कर धर्मभीरुता के संस्कार दिये जा रहे हैं।

ले-देकर पाखण्ड उन्मूलन का एक ही रास्ता बचता है कि आर्य समाज को संगठित कर पुनः सक्रिय किया जाये। विपुल साहित्य प्रकाशित हो, योजनाबद्ध ढंग से प्रचार-कार्य को गति दी जाये। धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन पर जोर दिया जाये। सर्वधर्म संघ की बैठकें बुला कर विवादित विषयों पर चर्चा हो। आर्य समाज का अपना स्वतन्त्र टी.वी. चैनल हो। सरलतम भाषा में वेद का प्रचार हो। डी.ए.वी. स्कूलों व गुरुकुलों से ही प्रचारक तैयार करके निकाले जायें। पाखण्ड को प्रश्रय देने वाली सरकारों के विरुद्ध प्रदर्शन हों और कानून बनवाने की प्रक्रिया तेज हो। एक ऐसी साझी मानव आचार संहिता तैयार हों जिनमें इन पाखण्डों को नकारा गया हो।

यह भी देखने में आ रहा है कि योग व अध्यात्म में रुचि व गति न रखने वाले आर्य समाजियों का आध्यात्मिक, मानसिक व आत्मिक बल इतना कमजोर हो जाता है कि वे भी फलित ज्योतिष, तन्त्र-विद्या आदि में फंसते चले जाते हैं और वैष्णो-देवी या किसी मजार पर भी मत्था टेकने जा पहुँचते हैं। इसका एक बड़ा कारण यह है कि आर्य समाज में कुछ ऐसे विजातीय तत्व, असमाजिक तत्व, शरारती तत्व जिनमें अधिकांशतः पौराणिक मानसिकता व संघी प्रवृत्ति के लोग घुस आये हैं। आर्य समाज को न केवल पहले इन तत्वों से अपने घर को पाक-साफ रखने की कार्य-योजना बनानी है बल्कि अपने सदस्यों के आध्यात्मिक विकास अर्थात् उनके साधना पक्ष को भी सुदृढ़ बनाना है।

भारतीय संस्कृति के मेरूदण्ड – मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम

– डॉ. रामनाथ त्रिपाठी

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के व्यक्तित्व का प्रभाव जिन परिवारों में है, वे आज भी परस्पर त्याग और स्नेह के सूत्र में बंधे हुए हैं। रामकथा पर आधारित नाटक, साहित्य, फिल्म आदि के द्वारा समाज को निरन्तर अनुप्रेरित न किया गया तो हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता परिवार प्रेम से हम वंचित रह जायेंगे।

कोई पूछे कि भारतीय संस्कृति की परिभाषा क्या है, तो बेहिचक उत्तर दिया जा सकता है कि राम का उदात्त चरित्र ही भारतीय संस्कृति है। एक पूर्ण पुरुष में जितने भी अच्छे गुण हो सकते हैं, राम उन सबके पुंज हैं। उन्होंने अनेकविध कष्ट झेलते हुए भी घर–परिवार, समाज, राष्ट्र और अखिल विश्व के समक्ष त्याग, स्नेह, शील और नैतिकता के जो आदर्श प्रस्तुत किये, उससे भारत का जन–जन प्रभावित है। यहाँ की चप्पा–चप्पा भूमि पर रामत्व की छाप है। रामायण घरेलू जीवन का महाकाव्य है। ऐसा ग्रंथ किसी अन्य देश या संस्कृति में उपलब्ध नहीं।

पिता की आज्ञा शिरोधार्य

कैकेयी ने भले ही छलपूर्वक राजा दशरथ से दो वर माँग लिये हों, पर राजा दशरथ ने कभी अपने मुँह से राम को वन जाने के लिए नहीं कहा था। वे मन ही मन चाहते थे कि राम वन न जाएँ। माता कौशल्या उन पर दबाव डाल रही थीं कि माँ का महत्त्व पिता से बढ़कर है। वे माँ के आदेश मानकर वन न जाएँ। गुरु वशिष्ठ, मंत्रिमण्डल के सभी सदस्य, पूरा रनिवास और समस्त प्रजाजन राम के पक्ष में थे। लक्ष्मण फुंफकारते हुए कह रहे थे – रघुनन्दन, इसके पहले कि कोई वनवास की बात जाने, आप राज्य पर अधिकार कर लीजिए। मैं आपकी बगल में धनुष लेकर खड़ा हो जाऊँगा। आप काल के समान युद्ध कीजिए। मैं भरत का पक्ष लेने वालों को वाणों से बींध दूँगा। पिता जी कैकेयी का साथ देंगे तो उन्हें भी दंडित करूँगा।

कैकेयी और मंथरा को छोड़कर कोई भी राम का विरोध नहीं कर रहा था। यदि वे वनवास को स्वीकार न करते तो कोई उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता था। ऐसी अनुकूल परिस्थितियों में भी उन्होंने इतना बड़ा त्याग किया, किसलिए? इसलिए कि श्रद्धेय पिता द्वारा दिए वचन झूठे न हो जाएँ। इस प्रकार उन्होंने राज्य का सुख त्याग कर और 14 वर्षों के कठोर व्रत को स्वीकार कर पितृ भक्ति का अभूतपूर्व आदर्श प्रस्तुत किया। पिता ने भी पुत्र वियोग में प्राण त्याग कर चरम वात्सल्य का परिचय दिया। राम ने परिवार के सभी सदस्यों का ध्यान रखा। यहाँ तक कि इतना बड़ा दण्ड देने वाली सौतेली माता कैकेयी की भी उन्होंने निन्दा नहीं की। पंचवटी में जाड़े की ऋतु में कोहरे से ढंकी गोदावरी में स्नान के लिए जाते हुए लक्ष्मण ने कहा था – ऐसी शीत ऋतु में महात्मा भरत तड़के सवेरे उठकर सरयू में नहाते और ठंडी धरती पर सोते होंगे। ऐसा धर्मात्मा पुत्र पाकर भी कैकेयी इतनी क्रूर कैसे हो गयीं? राम बोले लक्ष्मण, रहने दो, माता कैकेयी की निन्दा न करो। इस समय तुम केवल इक्ष्वाकुनाथ भरत की चर्चा करो।

मर्यादा की स्थापना

विमाता कैकेयी ने राम के प्रति क्रूर होकर घोर अनिष्ट किया था। लेकिन उन्होंने भी राम के चरित्र के विषय में जो शब्द बोले, विचारणीय हैं। जब भरत ननिहाल से लौटकर माता कैकेयी से मिले और उन्हें ज्ञात हुआ कि राम को वनवास दिया गया है तो उन्होंने चकित होकर पूछा क्या राम ने किसी ब्राह्मण का धन हरण किया है? किसी निरपराध व्यक्ति की हत्या की है अथवा क्या उनका मन पराई नारी की ओर चला गया है? उन्हें किसलिए वनवास का दण्ड दिया गया है? कैकेयी ने बताया बेटा, राम ने न तो किसी का धन छीना है और न किसी निरपराध की हत्या की है। वह तो पराई नारी की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखता, न रामः परदारान् स चक्षुभ्यमिपि पश्यति। रामचरित मानस में भी कहा गया है – जेहि सपनेहु परनारि न हेरी। उड़िया रामायण के अनुसार राम पराई नारी को सहोदर या माता कौसल्या के समान मानते थे। सीता ने भी स्वीकार किया था कि उनमें ही राम का गहन अनुराग है। परिस्थितियों से विवश होकर राम ने सीता को निर्वासित किया था किन्तु उन्होंने अन्य किसी नारी से पाणिग्रहण नहीं किया था। उन्होंने दाम्पत्य जीवन की मर्यादा स्थापित की थी। राम के चरित्र से प्रभावित होकर अन्य रामायणी पात्र भी उनके जैसा आचरण करते थे। लक्ष्मण ने भाभी सीता की चरणों को छोड़कर कभी आँख उठाकर उनके सौंदर्य को नहीं देखा था।

आरम्भ से ही राम जनमत को आदर देने वाले लोकप्रिय शासक रहे थे। जब वे अयोध्या को छोड़कर वन की ओर चले थे तो उनके पीछे ब्राह्मण, ऋषि आदि ही नहीं रजक (धोबी) तन्तुवाय (दर्जी) और अनेक प्रकार के शिल्पी (कारीगर) आदि जन भी अपने–अपने घर छोड़कर चल पड़े थे। राम उन्हें कौशल पूर्वक ही लौटा सके थे। चित्रकूट से दण्डकारण्य की ओर चलते समय अनेक ऋषियों की हड्डियों के ढेर लगे हैं। इन्हें राक्षसों ने मारा है। राम, तुम नगर में रहो या वन में, तुम्हीं हमारे शासक हो। इन राक्षसों से हमारी रक्षा

करो। राम ने उन्हें रक्षा का आश्वासन दिया था। रामचरित मानस में भी राम ने कहा है – निसिचरहीन करऊँ महि, भुज उठाई प्रन कीन्ह।

वे धनुष की प्रत्यंचा टंकारते हुए और भारी पगों से धरती को कंपाते हुए दक्षिण की ओर बढ़े थे। मानों वे राक्षसों को चुनौती दे रहे थे। उनके इस कृत्य से ही स्पष्ट है कि सीताहरण न भी हुआ होता तो भी उन्होंने राष्ट्रविरोधी राक्षसों से टक्कर ली होती। कुछ लोगों को भ्रम है कि राम ने एकाध बार मर्यादा का उल्लंघन किया है। जैसे, उन्होंने बाली को छिपकर मारा। बाल्मीकि रामायण को ध्यान से पढ़ा जाए तो पता चलता है कि राम ने बाली को छिपकर नहीं मारा था। बाली ने उनकी ओर वृक्ष और बड़ी–बड़ी शिलाएं फेंकी थीं। राम ने अपने वज्र जैसे वाणों से विदीर्णकर उसे मार गिराया था – क्षिप्तान् वृक्षान् समविध्य विपुलाश्च तथा शिला। बाली वज्र समैर्वाणेर्वज्रेणेव निपाततः।।

वस्तुतः सुग्रीव और सभी मंत्रियों को विश्वास हो गया था कि बाली मायावी असुर के साथ युद्ध करते हुए मारा गया है। तभी मंत्रियों ने सुग्रीव का अभिषेक कर वानरों की प्रथा के अनुसार तारा को उसकी पत्नी बना दिया था। इसमें कुछ भी अनुचित नहीं था। लेकिन बाली जब असुर को पछाड़कर आया तो उसने बिना सोचे–समझे निर्दोष सुग्रीव को पीट–पीटकर राज्य से बाहर खदेड़ दिया और अनुज वधु रूमा को बलात् अपनी पत्नी बनाया, सुग्रीव के जीते जी उसने यह अपराध किया था। उसने इससे भी बड़ा एक और अपराध किया था –आतंकवादी राक्षस निरन्तर आर्यावर्त की ओर आते रहते थे। वे उत्पात मचाकर ऋषि संस्कृति को नष्ट कर रहे थे। रावण के साथ बाली की सांठ–गांठ थी। बाली इन आतंकवादी राक्षसों को रोकता नहीं था। राक्षसों की घुसपैठ रोकने और दुराचारी रावण से टक्कर लेने के लिए बाली का विनाश अपरिहार्य था। राम ने उससे युद्ध नहीं किया था, उसे दंडित किया था।

सीता निर्वसन के प्रसंग में किसी रामायण में बताया गया कि राम ने एक धोबी के कहने पर सीता को निर्वासित किया। किसी रामायण में बताया गया कि रावण का चित्र बनाने के कारण राम ने सीता के चरित्र पर संदेह किया। जबकि बाल्मीकि रामायण के अनुसार राम ने कभी भी सीता के चरित्र पर संदेह नहीं किया। गुप्तचर ने उन्हें बताया था कि नगर, वन–उपवन, हाट–घाट और चौराहों पर खड़े होकर लोग चर्चा करते हैं कि राम ने पराये घर में कई मास तक रही सीता स्वीकार कर अच्छा नहीं किया। अब हमें भी अपनी स्त्रियों को सहना पड़ेगा क्योंकि जैसा राजा करता है प्रजा उसी का अनुसरण करती है। यह सुनकर राम को गहरा आघात लगा था। जिस जनता के लिए वे सदा समर्पित रहे वही उनका विरोध कर रही थी। राम सीता को प्राणों से भी अधिक चाहते थे। उन्होंने पतिव्रता सीता के चरित्र पर कभी भी संदेह नहीं किया। उन्होंने कहा था – मेरी अन्तरात्मा कहती है कि यशस्विनी सीता शुद्ध है – अन्तरात्मा च मे वेत्ति सीतां शुद्धां यशस्विनीम्। ऐसा था तो राम ने सीता को निर्वासित क्यों किया? उन्होंने ऐसा किया प्रजाजन के मत का सम्मान करने के लिए। उत्तर रामचरित नाटक में राम के चरित्र को सही रूप में समझा गया है।

राम के अभिषेक के समय वशिष्ठ ने कहा था – देखो राम, साधारण जनता ने भी ऐसा अनुभव किया है कि यह अभिषेक मानो उनका ही हो रहा है। तुम्हें भेदभाव से ऊपर उठकर सभी का ध्यान रखना होगा। प्रजारंजन तुम्हारा मुख्य कर्त्तव्य है। श्रेष्ठ राज्य की नींव शासकों के व्यक्तिगत त्याग, मर्यादा और बलिदान पर ही रखी जाती है। राम ने गुरु वशिष्ठ को आश्वस्त करते हुए कहा था – गुरुदेव, प्रजा के अनुरंजन के लिए मुझे अपने सभी सुख, माया–ममता, यहाँ तक कि सर्वाधिक प्रिय जानकी को भी त्यागना पड़े तो मुझे रंचमात्र व्यथा न होगी –

स्नेहं दयांच सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुंचते नास्ति मे व्यथा।।

राम ने एक ओर प्रजारंजक राजा के कर्त्तव्य का पालन किया तो दूसरी ओर उन्होंने पति का दायित्व भी निभाया। उन्होंने सीता को पिता के मित्र बाल्मीकि के आश्रम के निकट इसीलिए रखवाया था ताकि ऋषि सीता और उनकी गर्भस्थ सन्तान को संरक्षण दे सकें। सीता को निर्वासित कर वे स्वयं ही निर्वासित हुए थे। लक्ष्मण सीता को वन में छोड़कर जब अयोध्या लौटे थे तो उन्होंने पाया था कि राम इन चारों दिनों तक कक्ष में बन्द रहे थे। वे न सोये थे और न उन्होंने अन्न ग्रहण किया था। उनका मन लगाने के लिए यज्ञ की व्यवस्था की गई थी। यज्ञ धर्मपत्नी के बिना सम्पन्न नहीं होता। इसलिए उन्होंने किसी अन्य नारी का पाणिग्रहण न कर अपने पार्श्व में सीता की कंचन प्रतिमा स्थापित कराई थी।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के व्यक्तित्व का प्रभाव जिन परिवारों में है, वे आज भी परस्पर त्याग और स्नेह के सूत्र में बंधे हुए हैं। जहाँ यह प्रभाव नहीं रह गया है वहाँ माँ, पिता, पुत्र, भाई, बहन के सम्बन्धों की पवित्रता भी नष्ट हो रही है। रामकथा पर आधारित नाटक, साहित्य, फिल्म आदि के द्वारा समाज को निरन्तर अनुप्रेरित न किया गया तो हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता – 'परिवार प्रेम' से हम वंचित रह जायेंगे। तब भारत भोगवादी पश्चिम भले ही बन जाए, वह त्याग, स्नेह, शील–सम्पन्न नैतिकतावादी देश नहीं रह जायेगा।

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक (हरि.) में गुरुकुल कालवा के संस्थापक एवं शम्भू दयाल वैदिक संन्यास आश्रम गाजियाबाद के पूर्व अध्यक्ष स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज की प्रथम पुण्य तिथि प्रेरणा सभा के रूप में मनाई गई

स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज व्याकरण के सूर्य थे

–स्वामी आर्यवेश

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली, रोहतक के पूर्व मुख्य आचार्य, शम्भू दयाल आर्य वैदिक संन्यास आश्रम, गाजियाबाद के पूर्व प्रधान, गुरुकुल कालवा के संस्थापक पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर स्वामी इंद्रवेश विद्यपीठ टिटौली, रोहतक में प्रेरणा सभा एवं शांति यज्ञ का आयोजन हुआ। शांति यज्ञ के ब्रह्मा पद को यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने सुशोभित किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी चंद्रवेश जी महाराज की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर उन्हें याद करते हुए कहा कि वे व्याकरण के सूर्य थे। वे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनन्य भक्त थे। स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज का जीवन संघर्षों में बीता। उनके निधन से आर्य जगत की बहुत बड़ी क्षति हुई थी। उनके अचानक चले जाने के बाद से ऐसा लगता है जैसे व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया है। रोहतक के मकडौली गांव में जन्मे स्वामी चंद्रवेश जी ने देश–दुनिया में अपनी विद्वता के कारण ख्याति प्राप्त की।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानंद एडवोकेट ने कहा कि स्वामी चंद्रवेश जी आर्य समाज की शान थे। सतीप्रथा के खिलाफ आंदोलन तथा नशाखोरी के विरुद्ध जन जागरण में हमेशा नेतृत्व वर्ग के साथ रहे।

मिशन आर्यावर्त के निदेशक तथा गुरुकुल धीरणवास के प्रधान तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि हम स्वामी चन्द्रवेश जी के अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए कृत–संकल्पित हैं। उन्होंने बताया कि स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली में जो यज्ञशाला निर्माणाधीन है उसका नाम भी 'चन्द्रवेश यज्ञशाला' के नाम से रखा गया है।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या जी ने कहा कि ऐसे महात्मा विरले ही होते हैं। उनके कार्य ही उनकी पहचान हैं।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा के पूर्व प्रधान श्री रामनिवास आर्य ने कहा कि धीरे–धीरे करके आर्य समाज के स्तम्भ गिर रहे हैं। हमें संन्यासी तैयार करने के लिए ताकत लगानी चाहिए। क्योंकि जीवनदानी कार्यकर्ता ही आर्य समाज की सबसे बड़ी ताकत हैं।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या जी ने कहा कि स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज त्याग एवं तपस्या की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने बेटी बचाओ अभियान में वर्ष 2005 से लेकर अंतिम श्वांस तक सहयोग किया। हम उनको हमेशा अपनी प्रेरणाओं में जिंदा रखेंगे।

इस अवसर पर स्वामी मुक्तिवेश, श्री राजबीर वशिष्ठ, श्री राजेश खिड़वाली, श्री रौनक आर्य, श्री ईश्वर आर्य, श्री जिले सिंह आर्य, श्री महासिंह आर्य, श्री अजयपाल आर्य, श्री कृष्ण प्रजापत, श्री कमलेश, रोशनी, पूनम कुंडू, पूजा, अंतिम, प्रीति, इंदु, निधि, अमित आर्य, तकदीर आर्य, नरेश पंडित आदि उपस्थित रहे।

आर्य समाज सुन्दरनगर, फतेहाबाद में मासिक सत्संग का आयोजन

देश की आजादी में सर्वाधिक योगदान आर्य समाजियों की रही – स्वामी आदित्यवेश

आर्य समाज सुंदर नगर फतेहाबाद, हरियाणा में मासिक सत्संग का आयोजन 18 सितम्बर, 2022 को किया गया। इसका शुभारंभ यज्ञ के माध्यम से हुआ। यज्ञ के उपरान्त भजन एवं प्रवचन का सुन्दर कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा के प्रधान तथा गुरुकुल धीरणवास के अध्यक्ष तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि देश की आजादी के आंदोलन में आर्य समाज व ऋषि दयानन्द के सिपाहियों का सर्वाधिक योगदान रहा है। गुरु विरजानन्द, श्याम जी कृष्ण वर्मा, लाला हरदयाल, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, चाचा अजीत सिंह, शहीदे आजम भगत सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल जैसे सैकड़ों क्रांतिकारियों की प्रेरणा से लाखों लोगों ने अपने आपको आजादी की बलिवेदी पर आहूत कर दिया। उसी का परिणाम है कि आज पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है।

आर्य समाज सिरसा के संरक्षक श्री जगदीश सींवर ने कहा कि बच्चों को शिक्षा के साथ–साथ संस्कारित करने की भी आवश्यकता है। बच्चे संस्कारित होंगे तो देश का सही मायने में विकास होगा। वेद आधारित शिक्षा को बच्चों के लिए अनिवार्य कर देना चाहिए।

आर्य समाज की प्रसिद्ध भजनोपदेशिका बहन कल्याणी आर्या ने श्री कृष्ण के जीवन पर आधारित भजनों के माध्यम से उनकी जीवनी प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि श्री कृष्ण तथा श्री राम वैदिक संस्कृति की धरोहर हैं। उन्होंने माताओं को कहा कि आज परिवार तथा समाज में उनकी भूमिका पहले से ज्यादा बढ़ गई है। इसलिए वे टी.वी. सीरियल को छोड़कर वैदिक परम्परा को अपनाएं।

इस कार्यक्रम में आर्य समाज सिरसा, आर्य आज डिग मंडी, आर्य समाज बोदीवाली, जांडवाला बागड़, खाबड़ा, गुरुकुल मताना डिग्गी, डी.ए.वी., पुलिस पब्लिक स्कूल से प्रतिनिधि उपस्थित रहे। आर्य समाज के प्रधान श्री बंसीलाल जी ने आगन्तुक सभी अतिथियों एवं गणमान्य महानुभावों का स्वागत किया। मंच का संचालन आर्य समाज के मंत्री डॉ. राजबीर शास्त्री ने किया।

इस अवसर पर मिशन आर्यावर्त की निदेशक मुकेश आर्य, राजेश तनेजा, अरुण, खिल चौधरी, सुमन, एडवोकेट सुमन लता, सुरेंद्र, रवि आर्य, शंकर आर्य, महावीर आर्य, बुद्धराम आर्य सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

श्री शम्भू दयाल वैदिक संन्यास आश्रम, गाजियाबाद का 68वाँ स्थापना दिवस समारोह धूमधाम के साथ मनाया गया

देश की स्वतंत्रता में महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही

–स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के लिए शास्त्रार्थ परम्परा शुरू करनी चाहिए – ठा. विक्रम सिंह

महर्षि दयानन्द महान समाज सुधारक थे – बालेश्वर त्यागी

गत् 22 सितम्बर, 2022 को श्री शम्भू दयाल आर्य वैदिक संन्यास आश्रम, गाजियाबाद का 68वाँ स्थापना दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आश्रम के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी ने की। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से किया गया जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने वेद पाठ करके और नगर के विशिष्ट महानुभावों ने यजमान बनकर यज्ञ को सम्पन्न कराया। यज्ञ का संचालन आश्रम के उपाध्यक्ष स्वामी सूर्यवेश जी ने किया और मंच का कुशल संयोजन आश्रम के मजबूत स्तम्भ कुंवर सत्यकेतु सिंह एडवोकेट ने किया। इस अवसर पर प्रसिद्ध दानवीर, आर्य समाज के भामाशाह ठा. विक्रम सिंह जी मुख्यअतिथि के रूप में पधारे। उनके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश के पूर्व मंत्री श्री बालेश्वर त्यागी, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, श्री राजेन्द्र यादव, श्री सत्येन्द्र यादव आदि गणमान्य महानुभाव कार्यक्रम में उपस्थित थे।

श्री बालेश्वर त्यागी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि स्वामी जी ने सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध शंखनाद किया और समाज में एक नई चेतना पैदा की। स्वामी जी एक महान समाज सुधारक थे। उन्होंने बाल विवाह, सती प्रथा, दहेज एवं नारी जाति के अपमान के विरुद्ध पूरे समाज में एक जन–जागरण अभियान चलाया और नारी जाति को गौरवपूर्ण स्थान दिलाने का प्रयास किया।

मुख्य अतिथि ठा. विक्रम सिंह जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि संन्यास आश्रम गाजियाबाद अनेक वैदिक विद्वानों एवं शास्त्रार्थ महारथियों की कर्मस्थली रही है। आर्य जगत के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ अमर स्वामी जी महाराज, पं. उदयवीर शास्त्री एवं प्रो. रतन सिंह जैसे विद्वानों ने इसी स्थान से आर्य समाज के प्रचार–प्रसार का कार्य किया। मुझे भी यहाँ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। ठा. विक्रम सिंह जी ने आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के लिए शास्त्रार्थ महारथी तैयार करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि अब लोगों ने संन्यास लेना छोड़ दिया है, जबकि आवश्यकता है कि अधिक से अधिक लोग संन्यास की दीक्षा लेकर आर्य समाज का कार्य करें।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने निर्धारित विषय स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज के योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वराज्य की आवाज सर्वप्रथम 1875 में सत्यार्थ प्रकाश में यह कहकर उठाई थी कि विदेशी राजा स्वदेशी राजा से कभी भी अच्छा नहीं हो सकता। भले ही वह माता–पिता के समान व्यवहार करे। स्वामी दयानन्द जी के गुरु स्वामी विरजानन्द दण्डी ने 1857 की क्रांति के असफलता के उपरान्त लोगों में फिर से नये उत्साह एवं जोश का संचार किया था। उन्होंने छोटी–छोटी रियाशतों के राजाओं, खापों के अध्यक्षों एवं समाज के अग्रणी लोगों को अंग्रेज के विरुद्ध संगठित होकर संघर्ष करने की प्रेरणा दी थी। स्वामी विरजानन्द जी की ही प्रेरणा पाकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अनेक क्रांतिकारियों को स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पड़ने के लिए तैयार किया था। स्वामी दयानन्द जी की प्रेरणा से स्वामी श्रद्धानन्द जी, लाला लाजपत राय, श्याम जी कृष्ण वर्मा, भाई परमानन्द, सरदार अर्जुन सिंह, सरदार किशन सिंह, शहीदे आजम भगत सिंह, अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल, ठा. रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिड़ी, अशफाक उल्ला खाँ, राजगुरु, सुखदेव, यशपाल, चन्द्रशेखर आजाद एवं गणेश शंकर विद्यार्थी, राजस्थान का बारहट परिवार आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर किया। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि दुर्भाग्य एवं विडम्बना की बाद है कि आजादी के 75 वर्ष पूरे

होने के उपलक्ष्य में देश में अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है, किन्तु हजारों कार्यक्रमों के आयोजन में न तो आयोजन कर्ताओं और न ही उन कार्यक्रमों में बोलने वाले वक्ताओं ने स्वामी दयानन्द, स्वामी विरजानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द या अन्य अनेक आर्य बलिदानियों को स्मरण करना भी उचित नहीं समझा। किसी भी वक्ता ने उनके योगदान की न ही चर्चा की और न ही उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब जलियांवाला बाग का जघन्य काण्ड हुआ था और हजारों निहत्थे भारतीयों को जनरल ओ डायर ने मशीनगनों की गोलियों से भून डाला था तब किसी में यह हिम्मत नहीं बची थी कि वे अंग्रेज के इस अत्याचार के विरुद्ध खड़े हो सकें। उस समय आर्य समाज के महान सेनानी, वीर पुंगव स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आगे बढ़कर पंजाब के अमृतसर शहर में कांग्रेस का विशाल अधिवेशन करवाने की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली थी और जनता में फैले हुए भय एवं आतंक के वातावरण को समाप्त कर एक नये उत्साह का संचार किया था। जलियांवाला बाग काण्ड के उपरान्त जब अंग्रेज पुलिस ने महात्मा गांधी को पलवल में गिरफ्तार करके दिल्ली आने से रोक दिया था तब स्वामी श्रद्धानन्द जी ने ही दिल्ली के चांदनी चौक में टाऊन हाल के सामने हजारों सत्याग्रहियों का नेतृत्व करते हुए अंग्रेज पुलिस को चुनौती दी थी और अपनी छाती तान करके कहा था कि – चलाओ गोली और उठाओ संगीन। पहले तुम्हारी गोली और संगीन मेरी छाती में लगेगी उसके पश्चात् मेरे पीछे खड़े सत्याग्रहियों की ओर तुम्हारी संगीन उठ सकती है। इस सिंह गर्जना से अंग्रेज पुलिस पीछे हट गई, उसकी संगीने झुक गई और स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अदम्य साहस का एक उदाहरण प्रस्तुत कर देश के युवाओं में देशभक्ति का जोश भर दिया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी का कद देश के अन्य नेताओं से ऊँचा था। उनका सभी विशेष सम्मान किया करते थे किन्तु आज कोई नेता उनके इस अप्रतिम बलिदान को नमन करना तो दूर रहा, याद करना भी उचित नहीं समझता। इसी प्रकार अन्य सभी आर्य बलिदानियों के सम्बन्ध में विस्तार से स्वामी आर्यवेश जी ने बताया। उन्होंने हैदराबाद आन्दोलन की चर्चा करते हुए कहा कि यदि आर्य समाज का निजाम के विरुद्ध आन्दोलन न हुआ होता तो निजाम भारत में अपनी रियाशत का विलय इतनी आसानी से नहीं करता। ये आर्य समाज के ही बलिदानियों का प्रभाव था कि निजाम ने भारत में विलय करने का निर्णय कर लिया। स्वामी जी ने बताया कि हरियाणा के वर्तमान राज्यपाल जो हैदराबाद के रहने वाले हैं – महामहिम बंडारू दत्तात्रेय ने गत दिनों महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में स्वामी दयानन्द जी के जन्मदिवस समारोह में घोषणा पूर्वक कहा था कि यदि आर्य समाज का जबरदस्त आन्दोलन निजाम के विरुद्ध न हुआ होता तो हैदराबाद में तिरंगा झण्डा नहीं चढ़ सकता था। हैदराबाद के 4 हजार स्वतंत्रता सेनानियों को बाद में श्रीमती इन्दिरा गांधी की सरकार ने ताम्र पत्र और पेंशन देकर सम्मानित किया था। अपने अत्यन्त संक्षित उद्बोधन में स्वामी जी ने श्रोत्राओं को बहुत सारी घटनाएँ सुनाकर अचंभित कर दिया और यह कहने पर मजबूर किया कि इतने बड़े योगदान के बावजूद भी यदि कोई नेता महर्षि दयानन्द और समाज की स्वतंत्रता आन्दोलन में भूमिका की चर्चा नहीं करता तो यह घोर कृतघ्नता का कार्य है। इतिहास को छिपाना या झुठलाना एक निन्दनीय कृत्य है। बरसात का मौसम होने के बावजूद भी आश्रम का यह कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा और सभी लोगों ने आग्रह किया कि हर महीने में इस प्रकार का कोई न कोई कार्यक्रम आश्रम में अवश्य होना चाहिए जिससे लोगों को इतिहास के अनछुए पहलुओं की जानकारी मिले और वैदिक सिद्धान्तों से परिचित होने का अवसर मिले। कार्यक्रम के संयोजक श्री सत्यकेतु सिंह एडवोकेट ने अन्त में सभी महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया तथा स्वामी सूर्यवेश जी ने ऋषि लंगर में प्रसाद ग्रहण करने का निमंत्रण दिया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में स्वामी सूर्यवेश जी, श्री जितेन्द्र कुमार जी उपाचार्य, श्री मनोज बहुखंडी आदि के अतिरिक्त सर्वश्री सत्यकेतु सिंह एडवोकेट, वेद व्यास, मान सिंह पहलवान सहित अन्य गणमान्य उपस्थित रहे। स्थापना दिवस का यह कार्यक्रम अत्यन्त सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

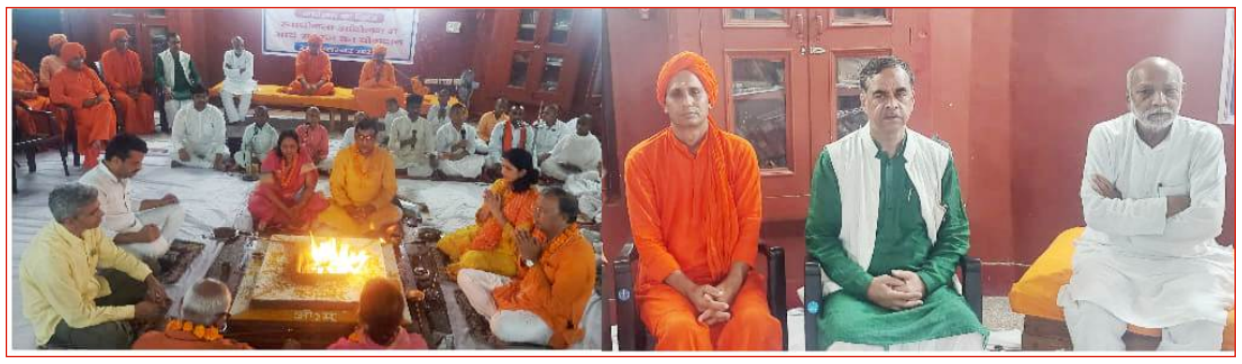

स्वतन्त्रता संग्राम में आर्य समाज का योगदान

– सत्यप्रिय शास्त्री

सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत तक आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य रहा। परन्तु आर्यों के आलस्य, प्रमाद और आपस की फूट के रूप में महाभारत के युद्ध के साथ वह स्वर्णिम अध्याय समाप्त हो गया और तत्पश्चात् वैदेशिक दासता का युग आरम्भ हुआ, जिसने विदेशियों की संगति से आर्यों के जीवन को वैदिक मान्यताओं से सर्वथा शून्य कर दिया था।

इस प्रकार दीन हीन हुई आर्य जाति किसी प्रखर सुधारक की प्रतीक्षा में ही थी कि ऐसे काल में गुजरात के टंकारा नगर में 1824 ई. में मूलशंकर (ऋषि दयानन्द सरस्वती) का प्रादुर्भाव हुआ। वे शैशव से ही सब प्रकार के रूढ़िवाद के घोर विरोधी थे। इसी चिन्तन प्रणाली और कार्य पद्धति ने उन्हें बालक मूलशंकर से उठाकर देशोद्धारक ऋषि दयानन्द सरस्वती के रूप में विश्व के मंच पर ला बिठाया, जिसका प्रमाण उन्होंने अपने आगामी जीवन में भारत का सर्वविध कायाकल्प करके प्रस्तुत किया। जब वे घर से निकले तब भारत में राजनैतिक जागरण के बीज फूटने के लिए प्रयत्नशील हो रहे थे। उनके दीक्षा गुरु स्वामी पूर्णानन्द जी राजनैतिक जागरण के कार्यों में संलग्न थे।

1857 और ऋषि दयानन्द– विरजानन्द जी ने तो तत्कालीन देशभक्त नेताओं से गुरु का पद भी प्राप्त कर लिया था। 1857 की क्रान्ति के हेतु आयोजित गुप्त सभाओं में वे मार्गदर्शन करते थे। ऋषि के जीवन चरित्र से ज्ञात होता है कि तीव्र विद्या पिपासु दयानन्द जी को विरजानन्द जी का पता 1856 में लगता है लेकिन वे उनके पास 1860 में पहुंचे हैं। यह विलम्ब क्यों? ऋषि का स्वलिखित चरित्र भी तीन वर्षो पर मौन है। चरित्र के अनुसार इस काल में उनके भ्रमण का क्षेत्र कानपुर के आसपास रहा है। उस समय उक्त क्रान्ति की गुप्त तैयारियाँ की जा रही थीं। वैसे भी दयानन्द की आयु उस समय 33 वर्ष के लगभग थी। यह अवस्था स्वभावतः ही उग्रता को पसन्द किया करती है। वैसे भी ऐतिहासिकों के मतानुसार उक्त क्रान्ति का सन्देश फैलाने में भी मठ के साधुओं का सक्रिय योगदान रहा है।

साहित्य द्वारा जागृति– 1875 वाले सत्यार्थप्रकाश के प्रथम संस्करण में उन्होंने नमक तथा जंगली लकड़ी पर लगे प्रतिबन्ध की कठोर शब्दों में भर्त्सना की थी। जबकि कांग्रेस ने इसे 1931 में अपने आन्दोलन का मुख्य मुद्दा बनाकर अंग्रेजी सरकार से संघर्ष किया था। 1882 में ही महर्षि ने अंग्रेजी अदालतों पर अविश्वास प्रकट कर दिया था। जबकि कांग्रेस के सामने यह तथ्य 1919 में तिलक द्वारा मि. शिरोल पर चलाये गये मानहानि के अभियोग के निर्णय से आया था। विदेशी राजा की अपेक्षा स्वदेशी राजा की उत्तमता, अंग्रेजों द्वारा भारत में जूते को अदालत में न घुसने देने की पीड़ा, गोरक्षा के प्रश्न पर तत्कालीन सरकार की आलोचना, जबकि इसी प्रश्न पर 1857 की क्रान्ति हुई और इसी आधार पर 1872 में नामधारियों के गुरु रामसिंह को जिलाबदर किया गया था। गोरक्षा और सरकार के विरुद्ध विद्रोह पर्यायवाची बन गये थे। ऐसे समय में गोहत्या की सारी जिम्मेदारी सरकार पर डालना, स्तुति प्रार्थनोपासना की पुस्तक आर्याभिविनय में विदेशी राज से छुटकारे की प्रार्थनाएं करना, आर्यों के प्राचीन गौरव का विस्तार से वर्णन ये सभी लेख महर्षि दयानन्द की उत्कट देशभक्ति एवं राजनैतिक पुनर्जागरण के महत्वपूर्ण दस्तावेज हैं। जिन्होंने आने वाले समय में भारत को वैचारिक क्रान्ति में अनुपम योगदान देकर आगामी स्वतन्त्रता संग्राम लड़ने के लिए सशक्त तथा समुद्यत किया था। इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता है। इसी प्रकार कांग्रेस के काल में देशभक्तों की पहचान खादी का वेश रहा था। परन्तु महर्षि दयानन्द के जो वस्त्र अजमेर में रखे हैं, वे सभी विशुद्ध देशी खादी के ही हैं। जबकि कांग्रेस के मंच पर खादी का सबसे प्रथम क्रियात्मक प्रयोग 1921 के अहमदाबाद अधिवेशन के समय दृष्टिगोचर हुआ था। कलकत्ता में तत्कालीन वायसराय नार्थब्रुक से महर्षि दयानन्द की भेंट होने, वायसराय द्वारा महर्षि से अपने भाषणों के आरम्भ में परमेश्वर से अंग्रेज राज्य की भारत में स्थिरता के हेतु प्रार्थना का संकेत देने पर महर्षि का न केवल दृढ़तापूर्वक इन्कार करना, प्रत्युत उक्त साम्राज्य के जल्दी ही दूर होने की अपने हार्दिक भाव की व्यंजना भी दयानन्द सरस्वती की ज्वलन्त राष्ट्रभक्ति का वज्र प्रमाण है। अपने जीवनकाल में ऋषि का सभी आर्य समाज सैनिक आवासों वाले नगरों में ही स्थापित करना कोई अचानक संयोगमात्र नहीं है। अपने जीवन के अन्तिम काल में राजस्थान के राजाओं से निकट सम्पर्क करना, वहाँ के स्वाधीनता प्रेमी रक्त में अंग्रेजी राज्य से छुटकारा प्राप्त करने के गुप्त अभिप्राय का सूचक है।

मृत्यु का रहस्य– तत्कालीन सरकार ने रियासतों के राजाओं विशेषकर महर्षि प्रभावाधीन राजाओं को एक परिपत्र प्रेषित किया, जिसका मुख्य ध्येय महर्षि के प्रभाव से उनको मुक्त करना प्रतीत होता है। इसमें कुछ प्रश्नों के उत्तर मांगे थे जोकि रियासत के अधिकार से सम्बन्धित थे। महर्षि ने जोधपुर की विवशता को देखते हुए उसका उचित उत्तर लिखवा दिया। ब्रिटिश सरकार के द्वारा उत्तरदाता का चित्र मांगने पर राजा ने सरलता से महर्षि का चित्र भेज दिया। कहते हैं कि इस पर राजस्थान के पोलिटिकल एजेण्ट पर दबाव पड़ा कि तुम्हारे राज्य में ऐसा खतरनाक व्यक्ति घूम रहा है और तुम उसका कोई इलाज नहीं सोचते। इससे पूर्व वायसराय लन्दन को अपनी राय भेज चुका था, जिसमें महर्षि को एक विद्रोही फकीर कहा गया।

इस प्रकार 1857 के पश्चात् भारत का राजनैतिक दृष्टि से पुनर्जागरण लाने के कारण महर्षि दयानन्द सरस्वती का बलिदान हुआ था। भारत की स्वाधीनता के हेतु कांग्रेस के मंच से दो प्रकार की विचारधाराओं ने अपने–अपने क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया। एक गाँधी जी के नेतृत्व में अहिंसात्मक सत्याग्रहों के द्वारा और दूसरे सशस्त्र क्रांतिकारी आन्दोलनों के जरिए। उक्त दोनों ही मोर्चों पर महर्षि दयानन्द के अनुयायी प्रथम पंक्ति में खड़े दिखाई देते हैं।

अहिंसात्मक सत्याग्रह द्वारा योगदान– राजनैतिक स्वतन्त्रता के क्षेत्र में गांधी जी के गुरु गोपाल कृष्ण गोखले माने जाते हैं। गोखले को यह विचार अपने आचार्य महादेव गोविन्द रानाडे से प्राप्त हुआ। परन्तु रानाडे तक यह विचार उनके गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती से पहुंचा है। पूना में 1875 में इनका मिलन हुआ था। घनिष्ठता यहाँ तक बढ़ी कि महर्षि ने रानाडे को अपनी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा में नियुक्त किया था। इस प्रकार गाँधी जी को यह विचार मूलतः महर्षि दयानन्द से ही मिले हैं। गाँधी जी को महात्मा पद से विभूषित करने वाले अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी थे, जिनका कांग्रेस के मंच पर भी समान प्रभाव रहा है। स्वाधीनता की तीन मूर्तियों में से लाला लाजपतराय तो महर्षि के प्रकट शिष्य थे। आर्यसमाजी नेता इन्द्र विद्यावाचस्पति का योगदान भी किसी से कम नहीं। देशबन्धु गुप्ता, घनश्याम सिंह गुप्त, भीमसेन सच्चर, महाशय कृष्ण एवं उनके दोनों पुत्र, महाशय खुशहालचन्द्र (स्वर्गीय महात्मा आनन्द स्वामी) तथा उनके सभी पुत्र, सिन्ध के ताराचन्द, हैदराबाद के पं. नरेन्द्र, विनायकराव विद्यालंकार, उत्तर प्रदेश के चौ. चरणसिंह, चन्द्रभानु गुप्त, गोविन्द बल्लभ पन्त, लालबहादुर शास्त्री, राजस्थान के चान्दकरण शारदा, कर्मवीर श्री जियालाल, हरियाणा के आचार्य भगवानदेव, स्वामी रामेश्वरानन्द, पंजाब के चौ. देवव्रत, वैद्य रामगोपाल, अजीत सिंह सत्यार्थी, देश प्रसिद्ध वक्ता कुं. सुखलाल आर्य मुसाफिर, बिहार के चौ. वेदव्रत (स्वामी अभेदानन्द) और इसी प्रकर डॉ. गोकुलचन्द्र नारंग, स्वामी स्वतन्त्रतानन्द, श्री देवीचन्द, स्वामी आत्मानन्द, अलगुराय शास्त्री, स्वामी सत्यदेव परिव्राजक इत्यादि सभी लोग आर्य समाज से स्वाधीनता की प्रेरणा प्राप्त करते रहे हैं। इतना ही नहीं बल्कि दादाभाई नौरोजी भी सत्यार्थप्रकाश पढ़कर उससे स्वाधीनता की प्रेरणा लेते थे।

सशस्त्र क्रान्तिकारी आन्दोलन में योगदान– जिसे सामान्य भाषा में क्रान्तिकारियों का योगदान कहा जाता है, इस दृष्टि में विचारने पर तो आर्य समाज का एक प्रखर राष्ट्रीय स्वरूप हमारे सामने आता है। इस दृष्टि से देखें तो महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमर शिष्य क्रान्तिकारियों के पितामह श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा का नाम हमारे सामने आता है। इनको महर्षि ने ही विदेशों में भेजा था। वहाँ जाकर उन्होंने इण्डिया हाऊस की स्थापना की थी, जो कि बाद में क्रन्तिकारियों का तीर्थस्थल बन गया था।

इसी प्रकार 31 वर्ष तक विदेशों की खाक छानने वाले आजादी के परवाने राजा महेन्द्र प्रताप जी भी आर्यसमाजी वातावरण की ही देन थे। इन्हीं के साथ भारत को स्वतन्त्र कराने की धुन में अपने को विदेशों में लापता कर देने वाले हरिश्चन्द्र (स्वामी श्रद्धानन्द के पुत्र) आर्यसमाजी वातावरण से ही स्वाधीनता की घुट्टी पिये हुए थे। दिल्ली षड्यन्त्र में भाग लेने वालों में भाई बालमुकुन्द तथा महात्मा हंसराज के पुत्र बलराज दोनों ही आर्यसमाजी थे। प्रथम विश्व युद्ध के समय विदेशी सरकार का तख्ता उलटने के लिये गदर पार्टी ने एक योजना बनाई थी। दुर्भाग्यवश भेद खुल जाने से वह सफल नहीं हुई। तब बगावत के अपराध में अनेकों को फांसी कारावास आदि दण्ड दिये गये थे। इनमें पंजाब के मोहनलाल पाठक, राजस्थान के प्रताप सिंह बारहट, जगतराम हरयानवी आदि दृढ आर्यसमाजी ही थे। इनमें प्रतापसिंह बारहट के पिता केशर सिंह वारहट तो ऋषि दयानन्द से दीक्षा लेकर उनके शिष्य बने थे। इन्होंने राजस्थान में जीवन भर क्रान्ति का प्रबल नाद बजाया। इसी वीर ने कोटा के एक दृश्य चित्र महन्त के यहाँ स्वामी श्रद्धानन्द के दामाद डॉ. गुरुदत्त तथा अन्य क्रान्तिकारियों के साथ डाका डालकर मिलने वाला धन देश की स्वाधीनता के कार्य में लगाने की योजना बनायी थी। इससे इनको काले पानी की सजा हुई थी। इसी प्रकार मैनपुरी षड्यन्त्र के मुखिया पं. गेन्दालाल जी दीक्षित तो प्रत्यक्ष रूप में आर्यसमाजी थे। आप आर्यसमाजी शिक्षा संस्थाओं में अध्यापन कार्य करते रहे। देवता स्वरुप भाई परमानन्द तो उन आर्यसमाजी उपदेशकों में से थे जो कि महर्षि के सन्देश के प्रचारार्थ विदेशों में भी गये थे और देशभक्ति के अपराध में जिन्हें फांसी के बदले काले पानी की यातनाएं सहनी पड़ी। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ऋषि दयानन्द के उन अमर शिष्यों में से थे, जिनके शब्दों में आर्य समाज उनकी माता और ऋषि दयानन्द उनके पिता थे। इनकी देशभक्ति किसी से छिपी नहीं है।

काकोरी के हुतात्मा – इसी प्रसंग में हमें काकोरी केस के अमर हुतात्मा बिस्मिल, रोशन सिंह तथा विष्णुशरण दुबलिश के रुप में महर्षि के अमर शिष्य आजादी के मोर्चे पर खड़े नजर आते हैं। बिस्मिल तो सत्यार्थप्रकाश से ही जीवन प्राप्त करने वालों में से थे। इनको सशस्त्र क्रान्ति तथा देशभक्ति की दीक्षा देने वाले स्वामी सोमदेव जी आर्य समाज के उपदेशक थे, जिन्होंने शाहजहाँपुर आर्य समाज मन्दिर में इनको दीक्षा दी थी। बिस्मिल नित्य हवन करने वालों में से थे। ठाकुर रोशन सिंह अपने को आर्यसमाजी मानते थे। विष्णुशरण दुब्लिश आर्य समाज के सदस्य रहे। फांसी के बाद राजेन्द्र लाहिड़ी की लाश का तो आर्यसमाजियों ने जुलूस निकाला था तथा सम्मानपूर्वक उसकी अन्त्येष्टि भी की थी।

भगतसिंह का दल– वीर भगत सिंह के दल में तो आर्य समाज से प्रेरणा प्राप्त करने वालों की संख्या और अधिक प्रकट होती है। भगत सिंह के दादा अर्जुन सिंह कट्टर आर्यसमाजी थे। नित्य ही हवन करते थे। आर्य समाज के उपदेशक भी थे। भगत सिंह के पिता सरदार किशन सिंह भी आर्यसमाजी संस्था में पढाते रहे। इनके चाचा अचिन्त्यराम जी आर्य समाज के सदस्य थे। कमीशन के सामने गवाही देते हुए उन्होंने कहा था कि मैं तो आर्यसमाजी विधि से सुखदेव की लाश की अन्त्येष्टि करता। इसी दल के सदस्य धन्वन्तरी, काशीराम तथा लेखराम प्रखर आर्यसमाजी थे। हंसराज वायरलैस तो सदैव ही अपने को आर्यसमाजी घोषित करते रहे।

1942 की क्रान्ति– देश की स्वाधीनता के हेतु लड़े जाने वाले इस संग्राम की लम्बी यात्रा में अन्तिम पड़ाव सन् 1942 की क्रान्ति के रूप में आता है। इसमें भी महर्षि के अनुयायियों ने पूर्ववत ही बढ़–चढकर भाग लिया। डी.ए.वी. कालेज लाहौर में पुलिस ने छात्रों पर निर्ममता से गोलियाँ चलायी थीं। गुरुकुल डौरली (मेरठ) पर तालाबन्दी कर दी थी। आर्य समाज नरेला में हवन कर रहे 70 आर्य समाजियों को पकड़कर जेल में डाल दिया था। नागपुर में श्री कालुराम नामक एक आर्यवीर को फांसी दी गयी थी। स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी को पंजाब के गवर्नर का वध करने के आरोप में नजरबन्द कर दिया था। स्वामी ईशानन्द, स्वामी धर्मानन्द तथा इनके पुत्र हरिदत्त को लालकिले के तहखाने में बन्द कर दिया था। इस आन्दोलन में भी आर्य समाज किसी से पीछे नहीं रहा है।

आजाद हिन्द सेना– नेता जी सुभाष के द्वारा आजाद हिन्द सेना का निर्माण और उसका कार्य इस इतिहास में एक गौरवशाली स्वर्णिम अध्याय है। उक्त सेना के तीन प्रमुख नायकों में से सहगल आर्यसमाजी परिवार की ही देन थे। उनके पिता महाशय अछरुराम जी जाने माने आर्यसमाजी तथा कानूनविद थे, जिन्होंने जानबूझकर ही अपने बेटे को इस भट्टी में झोंका था। जब लालकिले में इस सेना पर अभियोग चला, तब इनके बचाव पक्ष के वकीलों की जो कमेटी बनी थी, बख्शी टेकचन्द तथा दीवान बदरीदास के रूप में आर्य समाज ने योगदान करके अपनी राष्ट्रनिष्ठा को व्यक्त किया था। इसके अतिरिक्त सामान्य सैनिक के रूप में इस सेना में भर्ती होकर योगदान करने वाले आर्यसमाजियों की संख्या तो अनगिनत है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सशस्त्र क्रान्तिकारी दल के माध्यम से भी आर्य समाज देश की स्वाधीनता के लिए प्रयत्न करने वाले देशभक्तों की मुहिम में अग्रिम पंक्ति में खड़ा दिखायी देता है। जिसका फल 15 अगस्त, 1947 की स्वतन्त्रता के रूप में सामने आता है।

शिक्षा संस्थाओं के द्वारा जागरण– लार्ड मैकाले ने अंग्रेजी राज्य की जड़ें भारत में दृढ करने के लिए जिस अंग्रेजी शिक्षा का प्रचलन किया, सर्वप्रथम ऋषि दयानन्द और उनके परम शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के द्वारा उसे छिन्न–भिन्न करने का स्तुत्य राष्ट्रीय कार्य किया था। इसका आरम्भ गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना से होता है। ये संस्थाएं सर्वथा ही सरकारी प्रभाव से मुक्त थीं। इनकी शिक्षा, पाठ्यक्रम, अध्यापक, उत्सवों के आयोजनादि सभी स्वतन्त्र थे। वहाँ इतिहास पढ़ाने का तरीका देशभक्ति के भावों को उद्दीप्त करने वाला होता था। वहाँ छात्र अंग्रेजी विरोधी बातें प्रत्यक्ष किया करते थे। प्रखर देशभक्त समय–समय पर ठहर कर विदेशी सरकार पर अनेक प्रहार किया करते थे। इसी कारण एक बार बिजनौर के कलेक्टर ने गुरुकुल में शस्त्रों के छिपे होने के सन्देह में छापा भी मारा था।

नगरों से दूर एकान्त जंगल में होने के कारण भी सरकार इनको एक लम्बे अरसे तक सन्देह की दृष्टि से देखती रही। यह हाल सभी गुरुकुलों का था। इसी प्रकार डी.ए.वी. कालेजों को हम देख सकते हैं वे अंग्रेजी सरकार के प्रभाव से सर्वथा ही मुक्त थे। इन कालेजों ने स्वयं अपना सम्बन्ध विश्वविद्यालय के साथ करने में अपमान समझा था अतः उत्तम परिणाम पर डी.पी.आई. के द्वारा बधाई के पत्र के धन्यवादात्मक उत्तर को ही प्रार्थना पत्र मानकर कालेज की सम्बद्धता स्वीकार कर ली गयी थी। इस कालेज के छात्रावास में जब एक अंग्रेजी साबुन कम्पनी का एजेण्ट आया और उसने छात्रों को मुफ्त साबुन दिया, तब देशभक्त छात्रों ने वे सारी टिक्कियाँ फेंक दी। यह देशभक्ति का एक नमूना था। छात्र आर्य समाज जा रहे थे। जब एक अंग्रेज के बच्चे ने अपना घोड़ा दौड़ाकर इनकी पंक्ति को तोड़ दिया, तब वार्डन के फटकारने पर दूसरे दिन भी वैसा ही करने पर उस अंग्रेज पुत्र को उस छात्रनेता ने सड़क पर सबके सामने अपने जूते से पीटा था, जबकि उस समय अंग्रेज के सामने मुंह खोलना मौत को बुलाना होता था। यह सब कुछ ऋषि दयानन्द तथा आर्य समाज से प्राप्त देशभक्ति की शिक्षा का प्रभाव था। कानपुर डी.ए.वी. कालेज तो देशभक्त क्रान्तिकारियों का अड्डा था। शालिगराम शुक्ल इसके छात्रावास में ही पुलिस के साथ गोलियों से मुठभेड़ करते हुए शहीद हुए थे। लगभग यही हाल उस समय के सारे डी.ए.वी. कालेजों का था।

कुछ अन्य संकेत– इतिहास में मिलने वाले निम्न संकेतों से भी हम आर्य समाज की स्वाधीनता के प्रति आस्था समझ सकते हैं। अंग्रेजी काल में सैनिकों को आर्य समाज में जाने से रोका जाता था। उनके यज्ञोपवीत उतरवाये जाते थे। रोहतक में आर्य समाज मन्दिर जब्त करने की घोषणा भी कर दी गयी थी। आर्यसमाजी उपेदशक दौलतराम जी को सैनिकों में धर्म प्रचार करने पर मुकदमा चलाकर दण्ड दिया गया था। करनाल के जिलाधीश ने नगर के धनी जनों को अपने यहाँ आर्यसमाजियों को ठहराने का निषेध किया था।

लाहौर के जिलाधीश ने स्वामी श्रद्धानन्द जी से कहा था कि आर्य समाज पोलिटिकल संस्था है। 1910 में वैलेण्टाइन शिरोल ने "इण्डियन अरनेस्ट" पुस्तक में आर्य समाज का अंग्रेज विरोधी वर्णन किया था। लाहौर के सिविल मिलिटरी गजट पत्र में भी आर्य समाज को अंग्रेजो का राज्य उखाड़कर हिन्दू राज्य की स्थापना करने वाला कहा गया था। इसके अतिरिक्त देशभक्त महापुरुषों में से अधिकांश ने आर्य समाज और महर्षि दयानन्द को देशभक्ति एवं स्वाधीनता के पुजारी के रूप में ही स्वीकार किया है।

हैदराबाद सत्याग्रह आर्य समाज का स्वर्णिम अध्याय विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

आर्यों के बलिदान एवं संघर्ष का साक्षी है हैदराबाद सत्याग्रह–योगाचार्य मंजूश्री हैदराबाद

अब पहले से अधिक सतर्क रहने की आवश्यकता है –द्रोपदी तनेजा

वीरवार 29 सितम्बर 2022 को केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में "हैदराबाद सत्याग्रह आर्य समाज का स्वर्णिम अध्याय" विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।

मुख्य वक्ता माता द्रोपदी तनेजा (82 वर्षीय) ने कहा कि ऑनलाइन प्रोग्राम हम बजुर्गों के लिए वरदान साबित हुए। समय अच्छा कट जाता है। उन्होंने अपने मन की पीड़ा को व्यक्त करते हुए कहा कि हम अपने क्रांति वीरों को याद नहीं करते। उन्होंने बताया कि वर्ष 1942 में अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन में प. राम प्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह और अशफाकउल्ला खां ने आजादी के लिए कुर्बानी दी। हिंसा होते ही महात्मा गांधी आंदोलन बंद करा देते थे। हैदराबाद के निजाम ने मंदिरों में घंटी, पूजा, ओ३म् ध्वज, प्रभात फेरी पर प्रतिबंध लगा दिया था। उन्होंने कहा कि प्रसिद्ध क्रांतिकारी सरदार भगत सिंह के दादा जी सरदार अर्जुन सिंह विशुद्ध आर्य समाजी थे और इनके पिता सरदार किशन सिंह जी भी आर्य समाजी थे, भगत सिंह के विचारों पर भी आर्य समाज के संस्कारों की छाप स्पष्ट दिखाई पड़ती है। सांडर्स को मार कर भगत सिंह आदि पहले तो लाहौर के डी.ए.वी.कालेज में ठहरे फिर योजनाबद्ध तरीके से कलकत्ता जाकर आर्य समाज में शरण ली और आते समय आर्य समाज के सेवक तुलसीराम को अपनी थाली यह कहकर दे आये थे कि "कोई देशभक्त आये तो उसको इसी में भोजन करवाना"। दिल्ली में भगत सिंह, वीर अर्जुन कार्यालय में स्वामी श्रद्धानन्द और पंडित इन्द्र विद्यावाचस्पति के पास ठहरे थे क्योंकि उस समय ऐसे लोगों को ठहराने का साहस केवल आर्य समाज के सदस्यों में ही था। हैदराबाद में निजाम सरकार के विरूद्ध (सत्याग्रह चलाकर) जनता के हितों की रक्षा केवल आर्य समाजियों ने की है। पंजाब केसरी लाला लाजपत राय प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता थे। राजस्थान केसरी कुंवर प्रताप सिंह वारहट, पं. राम प्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह, विष्णुशरण और उनके साथी पक्के आर्य समाजी थे। इनके सम्बन्ध में श्री मन्मथ नाथ गुप्त ने जो स्वयं क्रांतिकारी थे उन्होंने साप्ताहिक हिन्दुस्तान के 13 जुलाई, 1858 के अंक में लिखा था। फांसी के बाद राजेन्द्र लाहिड़ी के शव का तो आर्य समाजियों ने जुलूस निकाला था तथा सम्मानपूर्वक उसकी अन्तयेष्टि भी की थी। इसी प्रकार के और भी अनेक उदाहरण मिलते हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि देश की स्वतन्त्रता की लड़ाई में आर्य समाज ने बढ़–चढ़कर हिस्सा ही नहीं लिया अपितु नेतृत्व भी किया है। नेता जी सुभाष के द्वारा आजाद हिन्द सेना का निर्माण और कार्य इतिहास में एक गौरवशाली स्वर्णिम अध्याय है। उक्त सेना के तीन प्रमुख नायकों में से सहगल आर्यसमाजी परिवार की ही देन थे। उनके पिता महाशय अछरू राम जी जाने माने आर्यसमाजी तथा कानून विद थे। जब लालकिले में इस सेना पर अभियोग चला तब इनके बचाव पक्ष के वकीलों की जो कमेटी बनी थी उसमें बख्सी टेकचन्द तथा दीवान बदरी दास के रूप में आर्यसमाज ने योगदान करके अपनी राष्ट्रनिष्ठा को व्यक्त किया था। इसके अतिरिक्त सामान्य सैनिक के रूप में इस सेना में भर्ती होकर योगदान करने वाले आर्यसमाजियों की संख्या अनगिनत है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सशस्त्र क्रान्तिकारी दल के माध्यम से भी आर्यसमाज देश की स्वाधीनता के लिए प्रयत्न करने वाले देशभक्तों की मुहिम में अग्रिम पंक्ति में खड़ा दिखाई देता है। जिसका फल 15 अगस्त, 1947 की स्वतन्त्रता के रूप में सामने आता है। देश को आज भी ऐसे ही एक आंदोलन की जरूरत है जो देश में नैतिकता की लहर ला सके।

मुख्य अतिथि योगाचार्य मंजूश्री (हैदराबाद) ने कहा कि आज के हालात अच्छे नहीं है सभी को सतर्क रहने की आवश्यकता है। अध्यक्ष कृष्णा पाहुजा ने युवा शक्ति को संगठित करने पर बल दिया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य ने कहा कि आर्य समाज नई पीढ़ी को देश भक्त, संस्कारवान बनाने के अभियान को तीव्र गति से चलाएगा।

राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि देश विरोधी ताकतों पर प्रतिबंध लगाना अत्यन्त आवश्यक है तथा देश के अमन–चैन, समानता, भाई–चारा और सबकी भलाई के लिए केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारों को कार्य करना चाहिए, जिससे देश की प्रगति हो सके।

इस अवसर पर गायिका प्रवीना ठक्कर, रविन्द्र गुप्ता, ईश् आर्य, प्रतिभा कटारिया, कृष्णा गांधी,रजनी चुघ, कुसुम भण्डारी, कौशल्या अरोड़ा, सुनीता अरोड़ा आदि के मधुर भजन हुए।

सार्वदेशिक सभा द्वारा चारों दर्शनों एवं संस्कार विधि का पुनर्प्रकाशन

भाष्यकार तर्क शिरोमणि – स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

1. वेदान्त दर्शन	– पृष्ठ 232	–	मूल्य 100 रुपये
2. वैशेषिक दर्शन	– पृष्ठ 248	–	मूल्य 100 रुपये
3. न्याय दर्शन	– पृष्ठ 240	–	मूल्य 100 रुपये
4. सांख्य दर्शन	– पृष्ठ 156	–	मूल्य 80 रुपये
5. संस्कार विधि	– पृष्ठ 278	–	मूल्य 90 रुपये

बढ़िया कागज, सुन्दर प्रिंटिंग व आकर्षक टाइटल के साथ 25 प्रतिशत छूट पर सभा कार्यालय में उपलब्ध है।

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

आर्य समाज के प्रथम नियम की व्याख्या

"सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।"

व्याख्या :– विद्या वह है जिसके द्वारा हम ब्रह्मा द्वारा सृष्टि के पदार्थों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करते हैं। विद्या एक तकनीक है जिससे हम सृष्टि के पदार्थों के गुणों तक पहुँचते हैं। अन्तिम कारण तक पहुँचते हैं तभी तो कार्य की इतिश्री प्राप्ति पर हम मुग्ध होते हें। इसी को दृष्टिगत करते हुए तभी तो वैशेषिक दर्शन में दर्शनकार महर्षि कणाद ने कहा है – 'कारणाभावात् कार्य अभावः'। अर्थात् कारण के न होने से कार्य नहीं हो सकता। यदि मिट्टी नहीं है तो घड़ा नहीं बन सकता, यदि लौह धातु नहीं तो सिंडासी नहीं बनेगी, इष्टिका नहीं तो घर नहीं बनेगा। किसी भी कार्य का कारण अवश्य होता है। हम जगत में देख रहे हैं कि यह सृष्टि है तो इसका स्रष्टा भी अवश्य है। पदार्थों से शिल्पी जो ब्रह्मा का कार्य करता है। अनेकानेक जनोपयोगी कार्यरूप में अनेक वस्तुएं बनाता है तो वह काष्ठ से अनेक वस्तुएं बनायेगा और लौह तथा तांबे से अनेक इलेक्ट्रिक अथवा इलैक्ट्रॉनिक उत्पाद् सृजित करेगा। ये सब शिल्पिक ज्ञान के वर्धन का चातुर्य है। आविष्कार शिल्पी विद्वान् (ब्राह्मण) करता है जो मानवोचित संस्कृति और सभ्यता का विस्तार और संस्कार करता है। कृषि, उद्योग धंधों में क्रमागत उन्नति और परिष्कृति होती चली गई। तभी तो यजुर्वेद के त्रिंशोऽअध्याय में यह वेद मंत्र बताता है – "मेधायै रथकारम् धैर्य्याय तक्षाणम्" अर्थात् मेधा में प्रतिष्ठित रथकार शिल्पी, धैर्य में स्थित तक्षान् अर्थात् शिल्प के सूक्ष्म कार्य में दक्ष (कम्प्यूटर के हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर में प्रवीण पंडित) ये दोनों विद्याएं और विद्याएं आवागमन और व्यापार को बढ़ावा देती है। इनका सभ्यता और संस्कृति में महान योगदान है तभी तो राजा (शासक) ईश्वर से प्रार्थना करता हुआ अथर्ववेद का यह मंत्र उच्चारित करता है –

ये धीवानो रथकाराः कर्मारा ये मनीषिणः।
उपस्तीन पर्ण मह्यम त्वं सर्वान कृण्वभितो जनान्।।
अथर्व. तृतीय काण्ड, सूक्त '5' का छठा मंत्र

अर्थ :– जो तीक्ष्ण बुद्धि वाले धीमान रथों के निर्माता हैं और जो बड़े पंडित, कर्मों में कुशल गतिवन्त शिल्पी जन हैं। हे परमेश्वर! तू मेरे लिए उन सब जनों को मेरे चारों ओर से समीपवर्ती कर। (ताकि मैं और प्रजा सुरक्षित रह सकें)

शिल्प विद्या संस्कृति और सभ्यता की माँ है। शिल्प विद्या हाथ से ही पकड़ी जाती है। उसका उल्लेख अथर्ववेद के पंचम काण्ड में 17वें सूक्त के तीसरे मंत्र में निर्दिष्ट है।

'हस्तनैव ग्राह्य अधिरस्या ब्रह्म जायेति चेदवोचत्।
न दूताय प्रहेया तस्थ एषा तथा राष्टे गुपितं क्षत्रिस्य''। अथर्व.

अर्थात् यह ब्रह्म विद्या (शिल्प विद्या) इसका आधार (आश्रय) हाथ से ही पकड़ना चाहिए। यह सताने वाले को देने योग्य नहीं अपितु इस विद्या से ही क्षत्रिय का राज्य सुरक्षित रहता है। ऋग्वेद के इस मंत्र को भी देखें – 'शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शंनो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः। शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु।।'' ऋ. 7–35–12

पदार्थ विद्या में शाश्वत् नियम कार्य साधते हैं जैसे गुणी में गुण होता है अतः विद्या सत्य होती है और अन्तिम कारण तक पहुँच कर हमें उत्तर मिलता है कि इन सबका आदि मूल परमेश्वर ही है। शाश्वत नियमों का नियन्ता अवश्यमेव परमेश्वर ही है।

विद्याएं अनेक हैं जैसे यांत्रिक विद्या, शिल्प विद्या, खगोल विद्या, भूगोल विद्या, भूगर्भ विद्या, तार विद्या, बेतार विद्या, कृषि विद्या, स्थापत्य विद्या, वास्तु विद्या, उड्उयन विद्या, धनुर्विद्या, शस्त्र–अस्त्र विद्या, सेतु सृजन विद्या, भेषज विद्या, आयुर्विद्या, प्राण विद्या, संगीत विद्या, शल्य क्रिया आदि ये सब विकास के आयाम रखती हैं। भौतिक समृद्धि का आधार इन विद्याओं का अभिवर्द्धन करना है।

महर्षि दयानन्द ने यज्ञ को ऐसे परिभाषित किया – 'यज्ञ उसको कहते हैं कि जिसमें विद्वानों का सत्कार यथायोग्य शिल्प अर्थात् रसायन जो कि पदार्थ विद्या उससे उपयोग और विद्यादि शुभ गुणों का दान आग्निहोत्रादि जिनसे वायु वृष्टि जल और औषधि की पवित्रता करके सब जीवों को सुख पहुँचाना, उसको उत्तम समझता हूँ। अन्त में यजुर्वेद के इस मंत्र पर भी विचार करना चाहिए।

मूर्द्धानं दिवोऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानर
मृतऽआ जातमग्निम्। कविँ सम्राजमातिथिं
जनाना मा सन्ना पात्रं जनयन्तदेवाः।।
इस मंत्र का भावार्थ महर्षि दयानन्द कृत –

"जैसे सत पुरुष धनुर्वेद के जानने वाले परोपकारी विद्वान् लोग धनुर्वेद में कही गई क्रियाओं से यानों और शास्त्रास्त्र विद्या में अनेक प्रकार से अग्नि को प्रदीप्त कर शत्रुओं को जीता करते हैं वैसे ही अन्य सब मनुष्यों को भी अपना आचरण करना योग्य है।"

सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी दयानन्द लिखते हैं – "विचार से सब सृष्टि के पदार्थों का प्रथम ज्ञान और पश्चात् क्रिया करने से अनेक प्रकार के पदार्थ और क्रिया–कौशल उत्पन्न होते हैं।"

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के नवम् समुल्लास में विद्या–अविद्या को परिभाषित किया। "जिससे पदार्थों का यथार्थ स्वरूप बोध होवे वह विद्या और जिससे तत्त्वस्वरूप न जान पड़े अन्य में अन्य बुद्धि होवे वह अविद्या कहलाती है"

यजुर्वेद में निहित राष्ट्रीय प्रार्थना भी हृदयंगम करना उचित है। परमात्मा (ब्रह्मा) की रचना में अद्भुत कृति है मनुष्य। वह अद्भुत पदार्थ है।

– व्याख्याकार – बाबूराम शर्मा 'विभाकर'
52/2, लाल क्वार्टर्स, गाजियाबाद–201001
मो.:–9350451497

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य समाज सेवा सदन बल्लभगढ़, फरीदाबाद (हरियाणा) का 46वाँ वार्षिकोत्सव अत्यन्त उत्साह के वातावरण में हुआ सम्पन्न
17 सितम्बर, 2022 को हैदराबाद मुक्ति दिवस का समारोह सिटी पार्क बल्लभगढ़ में किया गया आयोजित

आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी का हुआ मुख्य उद्बोधन

प्रखर वक्ता युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी एवं प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य महावीर मुमुक्षु ने दिये प्रवचन

कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व विधायक श्री राजेन्द्र सिंह बिसला ने की

आर्य समाज सेवा सदन बल्लभगढ़, फरीदाबाद (हरि.) का 46वाँ वार्षिकोत्सव एवं वेद कथा का आयोजन 14 से 18 सितम्बर, 2022 तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस कार्यक्रम में आचार्य महावीर मुमुक्षु मुख्य प्रवचनकर्ता रहे तथा श्रीमती अमृता आर्या (दिल्ली) के भजनोपदेश का कार्यक्रम चलता रहा। स्वामी जगत मुनि जी का आशीर्वाद तथा श्री राजेन्द्र सिंह बिसला पूर्व विधायक हरियाणा की अध्यक्षता रही और मंच का संचालन श्री जितेन्द्र सिंह आर्य ने संभाला।

14 से 16 सितम्बर, 2022 तक प्रतिदिन विभिन्न स्कूलों में भी कार्यक्रम आयोजित किये गये। 17 सितम्बर, 2022 को हैदराबाद मुक्ति दिवस के अवसर पर एक विशाल कार्यक्रम कल्पना चावला पार्क (सिटी पार्क) बल्लभगढ़ में आयोजित किया गया जिसमें स्वामी आर्यवेश जी को मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। स्वामी जी के अतिरिक्त इस समारोह में स्वामी श्रद्धानन्द जी एवं आचार्य महावीर मुमुक्षु जी के भी व्याख्यान हुए। इस कार्यक्रम में स्वामी आर्यवेश जी के साथ श्री बिरजानन्द जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, श्री रामनिवास आर्य (नारनौल), श्री मकेन्द्र कुमार, श्री प्रेम कुमार मित्तल आदि भी उपस्थित रहे।

इस पांच दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन आर्य समाज सेवा सदन के पदाधिकारियों श्री रघुवीर शास्त्री प्रधान, श्री जितेन्द्र सिंघल मंत्री, श्री चन्द्रभान भूटानी कोषाध्यक्ष, श्री देशबन्धु स्वागताध्यक्ष के प्रयास से अत्यन्त सफल रहा। इस पूरे कार्यक्रम में महिला मण्डल की ओर से माया देवी, ओमवती आर्या, इन्दिरा शर्मा, कान्ता अग्रवाल, कमलेश भूटानी, संतोष फौगाट, ज्योति सिंघल, ऊषा सेठी, सुशीला आर्या, सविता आर्या, दीपा गर्ग, सीमा आर्या, कौशल आर्या, कविता, ज्योति आर्या, अनिता व राजबाला शर्मा का विशेष सहयोग रहा। इसी प्रकार स्वागत समिति के सदस्य श्री जगदीश बिरमानी, श्री सुभाष चन्द्र आर्य, श्री अशोक सेठी, श्री सुरेश रावल, श्री धर्मवीर रावल, श्री रमेश मंगला, श्री रामकिशोर गोयल, श्री रामचन्द्र गोयल, श्री दयाचन्द आर्य, श्री प्रवीण गोयल, श्री श्रवण कुमार, श्री जय प्रकाश सिंघल, श्री रविन्द्र सिंह, श्री दिनेश मंगला, श्री पवन गर्ग, श्री संदीप मंगला, श्री राजेश आर्य, श्री राकेश चौधरी, श्री राजेन्द्र सिंह आदि ने अपना योगदान देकर विशेष भूमिका निभाई। कार्यक्रम में श्री जयपाल शास्त्री, श्री देवराज आर्य, श्री सुभाष गुप्ता, श्री सत्यदेव गुप्ता, श्री राम अवतार आय, श्री सुभाष मदान, श्री होती लाल आर्य, श्री राज सिंह आर्य, श्री अशोक अग्रवाल, श्रीमती विमला ग्रोवर, डॉ. गजराज आर्य, श्री शिव कुमार टुटेजा, श्री महेश चन्द्र आर्य, श्री दीपक चौधरी, श्री गोपाल शर्मा आदि भी अपनी गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में स्वामी आर्यवेश जी का माल्यार्पण किया गया। जिसमें सर्वश्री राजेन्द्र सिंह बिसला, श्री यादराम आर्य, ब्र. राजदेव नैष्ठिक प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा पलवल, श्री नारायण सिंह आर्य पंचाली, श्री नन्दलाल कालड़ा, डॉ. नानकचन्द आर्य, श्री सुशील चन्द शास्त्री, श्री बालकृष्ण शास्त्री आदि ने स्वामी जी का स्वागत किया। अपने उद्बोधन में स्वामी जी ने हैदराबाद आन्दोलन पर विस्तार से प्रकाश डाला। आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय नेता स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि देश के स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज का सर्वाधिक योगदान रहा। स्वामी जी ने कहा कि 17 सितम्बर का दिन पूरे देश में हैदराबाद विजय दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। यह सर्वविदित है कि हैदराबाद के निजाम ने आर्य समाज तथा अन्य धार्मिक गतिविधियों पर कई प्रकार के प्रतिबंध लगा दिये थे। ऐसी स्थिति में आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने निजाम के अत्याचारों तथा लगाये गये प्रतिबन्धों को खत्म कराने के लिए ऐतिहासिक आन्दोलन शुरू किया। आर्य समाज के संघर्ष के आगे निजाम को झुकना पड़ा तथा सभी प्रतिबन्ध हटाने पड़े। आर्य समाज की निजाम के विरुद्ध यह पहली विजय थी। सन् 1947 में जब देश आजाद हुआ तो निजाम ने भारत में अपनी रियासत का विलय करने से मना कर दिया था। उस समय आर्य समाज ने पुनः निजाम के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ा और आर्य समाज के क्रांतिकारी नौजवानों ने उसके ऊपर बम तक फेंककर उसे भारत में विलय होने के लिए मजबूर किया। उसी के परिणामस्वरूप निजाम ने समर्पण करते हुए हैदराबाद की रियासत को 17 सितम्बर, 1948 को भारत में विलय कर दिया। इस प्रकार से आर्य समाज ने स्वतंत्रता आन्दोलन में अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य किये हैं जिसे मिटाया या भुलाया नहीं जा सकता। स्वामी जी ने आर्य जनता को बताया कि स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज की भूमिका से जन–जन को अवगत कराने की आवश्यकता है। स्वतंत्रता आन्दोलन के बलिदानियों की उपेक्षा को स्वीकार नहीं किया जा सकता। आर्य समाज के बलिदानियों के इतिहास को मिटाया नहीं जा सकता। यह पांच दिवसीय कार्यक्रम सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।